प्रातःमुरली 11-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच: यह तो बच्चों को नहीं बताना है कि किस प्रति। बच्चे जानते हैं शिव
ज्ञान का सागर है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है, तो जरूर आत्माओं से बात करते होंगे। बच्चे जानते हैं
बाबा पढ़ा रहे हैं। बाबा अक्षर से समझते हैं परम आत्मा को ही बाबा कहा जाता है। सभी मनुष्य मात्र
परम-आत्मा को ही फादर कहते हैं। अभी आत्मा समझती है परम-आत्मा, बाबा परमधाम में रहते हैं। पहले2
यह पक्का करना है। अपने को आत्मा समझना है और यह पक्का2 निश्चय करना है। बाप जो सुनाते हैं
आत्मा ही धारणा करती है। जो ज्ञान परमात्मा में है वह ज्ञान आत्मा में भी आनी चाहिए। जो फिर मुख
वर्णन करना होता है। जो कुछ भी पढ़ाई पढ़ते हैं वह आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा निकल जाये तो पढ़ाई
का भी कोई मालूम न पड़े। समझो आज स्कूल से पास होकर आते हैं और आज ही शरीर छोड़ दे तो वह
कहां गई। आत्मा संस्कार ले गई। जाकर दूसरे शरीर में बैठी। तो पहले-पहले अपने को आत्मा पक्का2
करना पड़े। देह-अभिमान छोड़ना पड़े। यह भी बच्चे समझते हैं हमारी आत्मा ही सुनती है, धारण करती है।
आत्मा इसमें नहीं होती तो शरीर हिल भी नहीं सकता। अभी तुम बच्चों को यह पक्का2 निश्चय करना है।
परमपिता हम आत्माओं को ज्ञान दे रहे हैं। वह भी शरीर द्वारा दे रहे हैं, हम भी शरीर द्वारा सुन रहे हैं।
हम आत्मा हैं2 याद करना है। मैं आत्मा हूं। बाप को घड़ी2 भूल जाती है। देह याद आ जाती है। यह भी
जानते हो अच्छी वा बुरी संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। शराब पीना, छीछी बात करना यह भी आत्मा करती
है आर्गन्स द्वारा। आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा इतना पार्ट बजाती है। पहले2 तो आत्म-अभिमानी बनना
है। परमपिता परमात्मा एक ही बार आकर बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते हैं। हम आत्माओं को पढ़ाते
हैं। आत्मा ही यह नालेज फिर साथ में ले जावेगी। जैसे कहां मैं परम-आत्मा रहता हूं ज्ञान सहित, वैसे तुम
आत्मायें भी ज्ञान सहित रहेंगे। मैं तुम बच्चों को पूरा ज्ञान सहित ले जाता हूं। फिर तुम आत्माओं का पार्ट अलग
नई दुनिया में प्रारब्ध भोगने का। तो फिर प्रारब्ध शुरू हो जाती। ज्ञान भूल जाता। यह सभी अच्छी रीत धारण
करना है। बहुत हैं जो यह बातें भूल जाते हैं। अपने साथ बहुत-बहुत मेहनत करनी है। विश्व का मालिक बनना
है तो मेहनत बगैर थोड़े ही बनेंगे। पढ़ो2 इस पाइन्ट को ही भूल जाते हैं। क्योंकि यह नई नालेज है। जब
अपने को आत्मा भूल देह-अभिमान में आ जाते हैं तो कुछ न कुछ पाप होते हैं। देही-अभिमानी बनने से
ही पाप नहीं होते। पाप सभी कट जावेंगे। फिर आधा कल्प कोई पाप होगा नहीं। पहले-पहले तो यह निश्चय
करना चाहिए हम आत्मा है। आत्मा ही पढ़ती है, देह नहीं। आगे जिस्मानी मनुष्यमत चलती थी। अभी
परमपिता परमात्मा की श्रीमत बाप से मिल रही है। यह नई दुनिया के लिए बिल्कुल नई नालेज है। तुम नया
पैदा बन जावेंगे। इसमें मुंझने की बात ही नहीं। अनेकानेक बार तुम नये से पुराने, पुराने से नये बने हो।
यह बाप ने समझाया है। इसलिए अच्छी रीत पुरुषार्थ करते रहो। हम आत्मा है। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म
करती है। आफिस आदि में भी अपने को आत्मा समझ कर्मेन्द्रियों से काम कराते रहेंगे तो शिवबाबा याद
रहे याद पड़ेगा। आत्मा ही बाप को याद करती है। भल आगे भी बहुत कहते थे हम भगवान को याद करते
हैं। परन्तु वह निराकार है, अपने को साकार समझ निराकार को याद करते थे। अपने को निराकार समझ निराकार
को याद करना नहीं करते थे। अभी तुम्हें अपने को भी निराकार, बाप को भी निराकार समझ याद करना
है। यह बड़ी विचार सागर मथन करने की बात है। भल कोई2 लिखते हैं हम दो घंटा, अढ़ाई घंटा याद में
रहते हैं, कोई कहे हम सदैव शिव बाबा की याद में रहते हैं। परन्तु सदैव कोई याद कर न सके। अगर बाप
समझा हो तो पहले से कर्मातीत अवस्था हो जावे। कर्मातीत अवस्था तो बड़ी जबरदस्त होती है। कोई
कोई ही। कभी कर्मेन्द्रियां बन्द हो जाती हैं। यहां आंखें भी बन्द हो जाती हैं। सतयुग में निकल जाती हैं।
कर्मेन्द्रियां निर्विकारी बन जाती हैं। तो आत्मा अंग-अंग सुगन्धित हो जाती है। अभी तो

तुम्हारी अंग है। सतयुग को तो बहुत भारी महिमा है। उसको कहा जाता है दैवीन। नई दुनिया वैकुण्ठ होगा
लक्ष्मी नारायण का चित्र आज कोई बना नहीं सकता यहां पर। भल तुम देखकर भी आते हो परन्तु यहां कुछ
भी न हो। वहां तो नेचरल शोभा रहती है। तो अभी तुम बच्चों को याद से ही पावन बनना है। याद की
यात्रा 12 करनी है। इसमें बड़ी मेहनत है। बाबा पूछते हैं ल०ना० कौन बनेंगे तो सभी कहेंगे हम बनेंगे।
बाबा कहते2 कर्मातीत अवस्था को पाना है। पुरुषार्थ से उस मंजिल पर पहुंचना है। अभी कोई पहुंचा हुआ
जो है। वह खुद ही कहते हैं हम उस मंजिल से बहुत ही दूर है। अभी बहुत पुरुषार्थ चाहिए जो कर्मातीत
अवस्था को पा लें। सभी कर्मेन्द्रियां शीतल हो जाती हैं। अंग अंग बहुत सुगन्धित हो जाता है। बदबू
नहीं रहती है। अभी तो सभी कर्मेन्द्रियों में बदबू है। यह शरीर कोई काम का नहीं है। तुम्हारी आत्मा
अभी पुरानी बन रही है। शरीर तो बन न सके। वह तो जब तुमको नया शरीर मिले। अंग अंग में सुगन्ध यह
देवताओं की महिमा है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप आया है तो खुशी का पारा चढ़
जाना चाहिए। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गीता के अर्थ कितने बदल दिया है।
बाबा ने कहा भी है मेरे जो भक्त हैं, जो गीता पाठी होंगे वह कृष्ण के पुजारी जरूर होंगे। तो बाबा कहते हैं
देवताओं के पुजारियों को सुनाना। क्राईस्ट के पुजारी को नहीं। क्राईस्ट के पुजारी को नहीं। जो ईश्वर को मानते
हैं उनको नहीं। उनको भी नहीं सुनाना। शिव की और देवताओं की भी पूजा करते हैं और फिर कह देते हैं सर्वव्यापी।
कहानी करते हुये भी मंदिरों में जरूर जाते हैं। शिव के मंदिरों में ढेर के ढेर जाते हैं। बहुत सीढ़ी चढ़ कर जाते
हैं ऊपर में। शिव का मंदिर हमेशा ऊपर में बनाया जाता है। शिव बाबा भी आकर कर के सीढ़ी बताते हैं ना।
बाबा भी ऊंचा नाम ऊंचा धाम है। फिर ऊपर जाते हैं। बदरी नाथ अमरनाथ यहां शिव के मंदिर हैं।
नाम बहुत ऊंचा रखते हैं। ऊंच चढ़ाने वाला है तो उनका मंदिर भी ऊपर में रखा है। कायदे मुताबिक शिव का
मंदिर शहर से होना चाहिए। परन्तु शहर से इतना दूर नहीं, थक जाते हैं तब पहाड़ में बना देते हैं। नहीं तो
वह है ही ऊंच ते ऊंच रहने वाला। मंदिर भी बहुत ऊंचे बनाते हैं। यहां गुरुशिखर का मंदिर भी बहुत ऊंचा
पहाड़ी पर बनाया हुआ है। तो ऊंच ते ऊंच बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो। दुनिया में
कोई नहीं जानते कि शिव बाबा आकर पढ़ाते हैं। लोक सर्वव्यापी कह देते हैं। अभी तुम्हारे सामने रचयिता
भी खड़ा है। सिवाय बाप के और कौन कहेंगे यह तुम्हारी रूपआवश्यक है। बाप ही बच्चों को बतलाते हैं।
मनुष्य से देवता कैसे बनते हो। तुम भी सत्यना० में क्या सुनते थे। नर से ना० बनने का क्या। कैसे तो
पास हो जाता है उनको क्यों बताते हैं कि आगे क्या2 हुआ। जिसको कहानी कहा जाता है। यह है बड़ी
सही कहानी। ऊंच ते ऊंच बाप ऊंच ते ऊंच कहानी सुनाते हैं। यह कहानी तुमको बहुत ऊंच बनाने वाली
है। यह वेद याद रखनी है। और बहुतों को सुनानी है। कहानी सुनाने के लिए ही तुम प्रदर्शनी वा म्यूजियम बनाते
हो। 5000 वर्ष पहले भी भारत में क्या था यह कौन कहानी है ना। 5000 वर्ष पहले जरूर भारत ही था।
जिसमें देवी देवतायें राज्य करते थे। यह है सच्ची2 कहानी। जो दूसरा कोई कब बता न सके। यह रीयल
कहानी है। जो चैतन्य बृहस्पति बाप बै० सुनाते हैं। निराकार साकार में आकर तुमको कहानी सुनाते हैं। जिससे
तुम देवता बनते हो। इसमें पवित्रता मुख्य है। पवित्र न बनेंगे तो धारणा न होगी। शेरनी के दूध के लिए सोने
की बर्तन चाहिए। तो धारणा होगी। यह ज्ञान रत्नों का खजाना है ना। तो यह सोने का बर्तन होना
चाहिए। अभी पत्थर का है। सोने का हो तब धारणा हो सके। बड़ा अटेन्शन से सुनना है और धारण करना है।
कहानी तो बहुत सहज है। यह कहानी लिखी हुई है गीता में। परन्तु उसमें थोड़ा डाल दिया है। कहानियों में
बहुत कुछ के गपोड़े हो गये हैं। फायदा कुछ नहीं। भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि कितने हैं। ताप आदि होम शास्त्र
पढ़ते हैं। उन से भी कमाई करते हैं। इस पढ़ाई से उन्हें भी कमाई हो जाती है। यह पढ़ने वाले उन्हें
भी कमाई करते हैं। किसको पढ़ाते हैं। व्यापार में कमाई है ना। यह तुम्हारी भी कमाई है। दौड़ा ही चलती
है। [illegible]

ही है। दोनो व्यापार है। पढ़ाते भी हैं, कहते भी हैं मनमनाभव। पवित्र बनो। और कोई ऐसे कह न सके। न
मनाभव ही रहते हैं। कोई भी मनुष्य यहां पवित्र रह न सके क्योंकि भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। रावण राज्य
यह रावण राज्य अन्त तक चलना है। इसमें पावन होना असम्भव है। पावन कहा जाता है देवताओं को न
मनुष्यों को। सन्यासी भी मनुष्य हैं। उन्हों का है निवृत्ति मार्ग का धर्म। हर बात बाप अच्छी रीत समझाते
फिर भी कहते हैं तुम बाप को याद करो तो पवित्र बन जावेंगे। भारत में प्रवृत्ति मार्ग का ही राज्य चला
निवृत्ति मार्ग वालों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं। यहां तो स्त्री-पुरुष दोनों को ही पवित्र बनना है। दोनों
से कहते हैं तो ठीक है। नहीं तो झगड़ा हो पड़ता है। यह कालेज ही है जिसमें पवित्रता का ही झगड़ा
चलता है। और कोई सतयुग में पवित्रता पर झगड़ा चलता ही नहीं। कब नहीं सुना होगा। एक ही बात जब
आते हैं तब झगड़े होते हैं। साधु-सन्त आदि कब कहते हैं कि अबलाओं पर अत्याचार होवे। वहां
चिल्लाते पुकारते हैं। बाबा हमको बचाओ। बाप भी पूछते हैं नंगन तो नहीं हुए हो। याद कर
सकते हो। क्योंकि काम महाशत्रु है ना। एकदम गिर पड़ते हैं। इस काम विकार ने ही सभी को वर्थ नाट ए पेनी
बनाया है। पतित बने हैं। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम वैश्यालय में रहे हो। अभी पावन बन शिवालय में चलना
है। यह एक जन्म पवित्र बनो। शिव बाबा को याद करो तो शिवालय स्वर्ग में चलेंगे। फिर भी काम विकार लगना
मुश्किल है। कितना हैरान करता है। कोशिश होती है। कोशिश को निकालना चाहिए जब कि बाप कहते हैं। यह
बाप ही समझाते हैं। पवित्र जरूर बनना है। टीचर कोई बैठा थोड़े ही रहेगा। पढ़ाई थोड़ा समय ही चलेगी।
बाबा बताते हैं। हमारी स्थूल की आयु 100 वर्ष है। स्थूल की आयु कहेंगे ना। बाबा अपनी आयु थोड़े ही
कहेंगे। बाबा कहते हैं हम तो सदैव ही अजर हैं। नाम ही है अजरनाथ। पुनर्जन्म लेते नहीं हैं। इसलिए बाबा
कहता है अजरनाथ। तुमको भी आधा कल्प लिए अजर बनाते हैं। फिर तुम पुनर्जन्म लेते हो। वह तो पुनर्जन्म लेते
नहीं। तो अभी तुम बच्चों को जाना है ऊपर। मुंह उस तरफ टांगा हुआ तरफ करनी है। फिर उस तरफ मुंह क्यों
करना चाहिए। कहते हैं बाबा भूल जाता हूं। मुंह उस तरफ हो गया। तो गोया उल्टी बन जाते हैं। फिर नीचे
गिरा, ऊपर। उल्लू सा उल्टा लटकते हैं ना। इस समय तुम्हारा मुंह ऊपर होना चाहिए। अगर नीचे गया तो उल्लू
बन गये। तुम बच्चे जानते हो अभी उल्लू से हम अल्ला के बच्चे बनते हैं। तुम बाप को भूल देहधारी बनते
हो तो उल्टा बन जाते हो। बाप सभी कुछ बतलाते रहते हैं। बाप से कुछ भी मांगना न है। सिर्फ दो।
फिर दो। बाप तो रास्ता बताते हैं। रोशनी से रोशन बनना है। रोशनी से बुद्धि बनते साहूकार बनते हो।
तो कब कोई से मांगने की दरकार नहीं रहती। 21 जन्म। इतना तुम बाप से लेते हो। सुनाते हो बाबा तो
अथाह कमाई कराते हैं। कहते हैं जो चाहिए सो लो। यह है हाईस्ट (सब से ऊंच)। फिर जो चाहिए सो,
सो पूरा पड़ेगा नहीं तो प्रजा में चले जावेंगे। प्रजा भी जरूर बननी है। प्रजा तो लाखों बनती है। तुम्हारी म्यूजियम
आगे चल ढेर हो जावेगी। और बढ़ेगी। तुमको बहुत बड़े हाल चाहिए। कालेज मिलेंगे जिन में तुम सीखेंगे।
बहुतों को जरूर है। यह जो शास्त्रों के हाल बनाते हैं जिसको कोशघर कहते हैं। यह तुमको जरूर मिलेंगे।
सबूत पाते भी हैं कि पीछे भाग्य भार रहे हैं। ऐसे तुमको बहुत हाल आवेंगे। तुम समझेंगे शिवबाबा तुम
को कैसा पवित्र देवी-देवता बनाता है। फिर तुम विकार के लिए यह हाल बना रहे हो। ट्रस्टियों को बुलाओ
दर्शन दो। बोलो गीता निकालो। भगवानुवाच: है ना काम महाशत्रु है। इससे तुम ने आदि मध्य, अन्त दुःख ही
पाया है। अभी पतित से पावन दुनिया में चलना है। तुम फिर यह काम को भगा न सकते। अगर
जीतने महारथी हैं काम महाशत्रु है। तुम फिर कोसघर क्यों खोलते हो। शिव के मंदिर के बगल में दो
बगल
मंदिरों के मंदिर के बगल में कोसघर खोलना कितना अनर्थ है। आवाजें तुम देखना बड़े। फिर तुम्हारे
होंगे। अभी तुम्हारी बुद्धि में नहीं बैठता है। इतने विशाल बुद्धि नहीं चले हैं। छोटी बुद्धि है इसलिए छोटे

...तब कहते हैं। देवियां हो। इसमें तो बहुत दूरदेशी बनी हैं। तुमको ऐसे2 हाल दिखेंगे। तुम हाल देखेंगे
के लिए। बाबा लेकर रजिस्टर आदि आने को तुमको देखना नहीं। बाप कहते हैं मैं कोई ऐसे ही बुद्धू
का दुनिया जो फिर भी बन जाना पड़े। बच्चे के पार्ट2 में तालाब भरता है। वाकई तो सभी मिट्टी में
मिलना है। ऐसा हम होन लेने हो क्यों। बाप सभी से बड़ा एक्टर भी है। होशियार भी है, चोरी भी है,
। है। यह भी तुम बच्चे जानते हो वह है नई दुनिया। वहां क्या2 बनायेंगे। सभी चीजें नयी ही बनेंगी
जो झूठी चीजें बनाते हैं। देवियों के कैसे2 चित्र बनाते हैं। पतली कमर, डांस ऐसी करती हैं। यह दुनिया
है। बिल्कुल पत्थर बुद्धि, जंगली जनावर हैं। मनुष्य राम राम जब कहते हैं तो भगवान को ही याद करते
राम को तो नाहक बिल्कुल बैठ गलानी की है। भगवान की कब भगवती चीजें हो सकती है? कितने नाम
बन गये हैं। तमोप्रधान है ना। महान दुःख को सतोप्रधान, महानसुख को तमोप्रधान कहा जाता है। (
बड़ा महानमूर्खता है एक। भगवान को सर्वव्यापी ठिकाने-भितर में कहना। तब बाप कहते हैं तुमने हमें
गलानी की है। इसलिए गायन है जब2 भारत में धर्म ग्लानी .... अभी तो भारत का नाम बदल हिन्दू
कह देते हैं। हिन्दू-धर्म कह देते। बाप कहते हैं मैं भारत में ही आता हूं। भारत का ही नाम उड़ा कर हिन्दू
कह देते हैं। कब भारत कब हिन्दुस्तान कहते रहते। दो नाम रख दिये हैं। वास्तव में नाम एक होता है।
नाम थोड़े ही रखते हैं। यह भी समझते नहीं कि हम क्या कर रहे हैं। भारत में ही स्वर्ग था। और कहां तो
होता नहीं। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं बैठता है। तुमको अन्दर लगता है। बड़े2 जज बैरिस्टर आदि
भी बुद्धि में बिल्कुल ही नहीं बैठता। उनको यह पता नहीं पड़ता कि बाप आकर नई दुनिया का मालिक बनाते
हैं। कुछ ही हो, जब कहते हैं मा राम राम कहते हो। कहते हैं तो बाप कहते हैं। दिन-रात याद करते
रहो। भल दिन-रात आते रहें तो भी तुम छोड़ो नहीं। तुम कहते हो प्रदर्शनी में समझाते2 गये हो।
हां। यह आते हैं। वास्तव में थकावट होनी न चाहिए। तुम योग में जब मस्त हो जायेंगे तो फिर तुम्हारी
तुमको बैठ धोखा नहीं देगी। तुम कब थकेंगे नहीं। कमाई में कब कोई अंग थकता नहीं है। अभी तुम देही
मानी हो तो थक जाते हो। देही-अभिमानी में ~~थकेंगे~~ थकावट नहीं होती। तुम्हारा गला ~~धूटता~~ है, थक
जाने का धोखा कब कहां है। स्वर्ग में तो सभी कर्म इन्द्रियां वश में रहती हैं। कब धोखा नहीं देतीं। कोई
में कब कोई तकलीफ नहीं होती। यह ज्ञान बड़ा अद्भुत है। तुम यहां कौड़ी के परियां बनती हो। कब
रानी तथा प्रजा खूबसूरत होते हैं। यहां तो यह बात है नहीं। यहां तो और ही काला बनता। अच्छा। नहीं
सभी की नजर लगती रहेगी। छोटी बातें भी यहां ले हैं। अच्छा आज मोग है। मीठे2 सजनी। बच्चों प्रि
गुरुवार के दिन सदगुरु का बाप का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

(रहोहुई पायन्दस): तुम बच्चे जानते हो हम अपने पर 5000 वर्ष के बाद लौटते हैं। पहले2 हम आ
दूसरे पीछे आते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ड्रामा है। स्व आत्मा दर्शन होता है। सृष्टि चक्र का
चक्रवा? बाबा ने। पहले2 बाबा को कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी। वही फिर तुमको आप समान बनाते
स्वदर्शनचक्रधारी देवताओं को नहीं कह सकते हैं। परन्तु उनका अर्थ समझाते हैं। तुमको स्वदर्शनचक्र फेरना
भूल जाते हो। विकार में जाने से सारा ज्ञान गुम हो जाता है। तो तुमको शोभेगा नहीं। यह भी ड्रामा
है। यह बुद्धि का नाटक बड़ा अन्दर गुप्त है। अनेक बार पार्ट बजाते रहते हैं। सीढ़ी उतरते और चढ़ते
जीत हो। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुमको यह चक्र लगाने का पार्ट मिला हुआ है। तब मनुष्य कहते हैं
और आता अरे क्या फायदा। 84 का चक्र लगाते रहते हैं। अरे यह बनी बनाई दुनिया है ना। ऐसे
कहें ऐसे क्यों। तो मीठे2 बच्चों को स्वदर्शनचक्रधारी एक्युरेट बनना है। फिर कहें आज नहीं। तुम
जब तक जीयेंगे जब पालन करेंगे। इतना याद में रहना मुश्किल है। बेहद सहित और जो
भी भूल जाओ। गुलने की कोशिश करनी पड़ती है। वाकई जाकर आत्मा बनती है। अच्छा।